National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(65): 332-335
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

पूजा द्विवेदी
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय

Correspondence:
पूजा द्विवेदी
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय

हिंदी सिनेमा संगीत और मीडिया की वैश्विक पहुंच

पूजा द्विवेदी

सारांश

हिंदी सिनेमा का संगीत केवल मनोरंजन का घटक नहीं, बल्कि एक ऐसी सांस्कृतिक भाषा है जो ध्वनि, दृश्य, नृत्य और स्मृति के संयुक्त रूप में सीमाओं को पार करती रही है। यह शोध आलेख हिंदी सिनेमा-संगीत की वैश्विक पहुंच को तीन परतों में समझता है: तकनीकी माध्यमों का परिवर्तन, प्रवासी समुदायों और नए वैश्विक श्रोताओं की ग्रहणशीलता, तथा उद्योग के भीतर अधिकार, वितरण और विपणन की नीतियाँ। उपलब्ध अकादमिक साहित्य के गुणात्मक पाठ-विश्लेषण, औद्योगिक संरचना पर केंद्रित अध्ययनों और श्रोता-अध्ययन की अंतर्दृष्टियों के आधार पर यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि हिंदी फिल्म-गीतों की वैश्विकता केवल "लोकप्रियता" नहीं, बल्कि एक सतत रूपांतरणशील प्रक्रिया है जिसमें संकर सौंदर्यशास्त्र, भाषिक बहुलता, और मंच-आधारित प्रसार-तंत्र निर्णायक भूमिका निभाते हैं। साथ ही, यह आलेख यह भी दिखाता है कि वैश्विक विस्तार के साथ अधिकार-संरक्षण, श्रेय-वितरण, सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व, तथा स्थानीय संगीत पर पड़ने वाले दबाव जैसे प्रश्न और तीखे हुए हैं।

प्रमुख शब्द- हिंदी सिनेमा संगीत, वैश्वीकरण, प्रवासी समुदाय, संकर सांस्कृतिक सौंदर्यशास्त्र, मीडिया एवं तकनीकी माध्यम

परिचय

हिंदी सिनेमा का संगीत भारत में लंबे समय तक "लोकप्रिय संगीत" का केंद्रीय रूप रहा है और यही केंद्रीयता उसे विश्व-स्तर पर पहचान दिलाने की आधारभूमि भी बनती है। गीत सिनेमा के भीतर कथा, भाव, और चरित्र-निर्माण का साधन तो हैं ही, वे सिनेमा के बाहर भी स्वतंत्र सांस्कृतिक वस्तु बनकर रेडियो, ध्वनि-मुद्रण, कैसेट, दूरदर्शन, समारोहों, नृत्य-प्रदर्शनों और अब अंकीय माध्यमों में अलग जीवन जीते हैं। यह "दोहरे जीवन" वाला गुण-चलचित्र के भीतर भी और बाहर भी-हिंदी फिल्म-संगीत को वैश्विक सांस्कृतिक प्रवाहों के लिए विशेष रूप से अनुकूल बनाता है।[1]

वैश्विक पहुंच को केवल विदेशों में सुन लिए जाने तक सीमित कर देना अपर्याप्त होगा। यहां "वैश्विक" का अर्थ है: श्रोता-समूहों का विविधीकरण, ग्रहण-स्थितियों का बदलाव, भाषिक-अर्थों का पुनर्निर्माण, और उद्योग के वितरण-तंत्र का अंतरराष्ट्रीय विस्तार। एक ओर प्रवासी भारतीय समुदायों के लिए फिल्म-गीत स्मृति और पहचान की डोर बने; दूसरी ओर गैर-भारतीय श्रोताओं के लिए वे नृत्य-उत्सव, दृश्यात्मक भव्यता, और संकर ध्वनि-रूपों के माध्यम से आकर्षण का स्रोत बने। यही द्वि-दिशात्मक ग्रहणशीलता वैश्विक विस्तार का आधार बनती है।[2]

इस आलेख का केंद्रीय प्रश्न यह है कि हिंदी सिनेमा-संगीत की वैश्विक पहुंच किन माध्यमिक और सामाजिक प्रक्रियाओं से निर्मित होती है, और यह पहुंच किन सांस्कृतिक व औद्योगिक तनावों को जन्म देती है।[3]

इसी संदर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि हिंदी सिनेमा-संगीत की वैश्विक यात्रा केवल संचार-माध्यमों के विस्तार का परिणाम नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक स्मृति, भावात्मक अभिव्यक्ति और सौंदर्यात्मक संप्रेषण की जटिल अंतःक्रिया से निर्मित होती है। गीतों में निहित भाव, लय और दृश्यात्मक संकेत ऐसे सांस्कृतिक कोड रचते हैं, जो भिन्न भाषिक और सामाजिक पृष्ठभूमियों में भी ग्रहण किए जा सकते हैं। इस प्रकार हिंदी फिल्म-संगीत न केवल राष्ट्रीय पहचान का संवाहक बनता है, बल्कि वह वैश्विक सांस्कृतिक संवाद की एक सक्रिय और प्रभावी विधा के रूप में भी स्थापित होता है।

साहित्य-समीक्षा और सैद्धांतिक रूपरेखा

वैश्वीकरण के सांस्कृतिक अध्ययन यह बताते हैं कि सांस्कृतिक रूप किसी एक केंद्र से सरल रेखा में नहीं फैलते, बल्कि अनेक "प्रवाहों" के जरिए नए संदर्भों में पुनर्संयोजित होते हैं। इस दृष्टि से हिंदी फिल्म-संगीत को "ध्वनि-प्रवाह" और "दृश्य-प्रवाह" की संयुक्त इकाई की तरह समझना उपयोगी है, जहां संगीत अकेला नहीं चलता-उसके साथ नृत्य-रचना, मुख-अभिनय, वस्त्र-भूषा, और कथात्मक संकेत भी चलते हैं।[4]

उपनिवेशोत्तर विचारधारा में "संकरता" की अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि सांस्कृतिक रूप अक्सर दो या अधिक परंपराओं के बीच बनते-बिगड़ते हैं, और इसी "बीच की जगह" में नया अर्थ पैदा करते हैं। हिंदी फिल्म-संगीत का इतिहास भी राग-आधारित परंपराओं, लोक-धुनों, और बाहरी प्रभावों के रचनात्मक मेल से बना है। वैश्विक मंचों पर यही संकरता कभी "परिचित विदेशीपन" की तरह ग्रहण की जाती है, तो कभी स्थानीय परंपराओं के साथ घुलकर नए नृत्य-और-ध्वनि रूपों को जन्म देती है।

हिंदी सिनेमा के औद्योगिक अध्ययन यह दिखाते हैं कि वैश्विक पहुंच केवल रचनात्मकता का परिणाम नहीं, बल्कि उत्पादन-व्यवस्था, सितारा-प्रणाली, विपणन, और अधिकार-प्रबंधन की रणनीतियों से भी संचालित होती है। समकालीन हिंदी फिल्म उद्योग के भीतर संगीत की भूमिका कभी "कथात्मक आवश्यकता" से अधिक "पूर्व-प्रचार" और "आकर्षण-निर्माण" की रणनीति बन जाती है-गीत पहले फैलता है, फिर फिल्म तक श्रोता को लाता है। यह रणनीति वैश्विक बाजारों में भी प्रभावी रही है, क्योंकि संगीत भाषा-सीमाओं को अपेक्षाकृत जल्दी पार कर सकता है।[5]

प्रवासी माध्यम-अध्ययन यह रेखांकित करते हैं कि प्रवासी समुदायों में हिंदी सिनेमा-संगीत "घर" की कल्पना का पुनर्निर्माण करता है। विवाह, त्योहार, और सामुदायिक आयोजनों में गीत केवल सुनने की वस्तु नहीं रहते; वे सामूहिकता, पीढ़ियों के बीच संवाद, और सांस्कृतिक निरंतरता के अनुष्ठान बन जाते हैं। इसी आधार पर बाद में गैर-प्रवासी श्रोता भी इन गीतों को उत्सवधर्मी ध्वनि-परंपरा के रूप में अपनाते हैं।[6]

इस आलेख की पद्धति मुख्यतः द्वितीयक साहित्य पर आधारित गुणात्मक विश्लेषण है, जिसमें तकनीकी माध्यमों के इतिहास, उद्योग-रचना, और श्रोता-ग्रहण के अध्ययन को एक साथ रखकर निष्कर्ष निकाले गए हैं।[7]

वैश्विक पहुंच की प्रक्रिया: इतिहास, मंच और श्रोता

हिंदी सिनेमा-संगीत की वैश्विक पहुंच को समझने के लिए पहले यह देखना होगा कि संगीत का प्रसार हमेशा किसी एक माध्यम पर निर्भर नहीं रहा। ध्वनि-मुद्रण और रेडियो के दौर में गीतों ने सिनेमा-भवन से बाहर निकलकर घरों और सार्वजनिक स्थलों में प्रवेश किया। बाद में कैसेट संस्कृति ने इस प्रसार को और अधिक लोकतांत्रिक बनाया-गीत अब संग्रहित किए जा सकते थे, बार-बार सुने जा सकते थे, और स्थानीय बाज़ारों में अनौपचारिक ढंग से भी घूम सकते थे। इसने प्रवासी समुदायों तक पहुंच बनाने के लिए एक सस्ता और टिकाऊ मार्ग भी दिया।

इसके बाद दृश्य-माध्यमों के विस्तार ने गीतों के वैश्विक रूप को निर्णायक ढंग से बदला। हिंदी फिल्म-गीत केवल ध्वनि नहीं, बल्कि दृश्य-प्रदर्शन हैं; नृत्य-रचना और दृश्य-भव्यता उन्हें सार्वभाषिक आकर्षण देती है। यही कारण है कि जब उपग्रह-प्रसारण और विशेष संगीत-आधारित कार्यक्रमों का प्रसार हुआ, तो गीतों ने एक नई अंतरराष्ट्रीय दृश्यात्मक भाषा पाई। इस दृश्यात्मकता ने नृत्य-शिक्षण, मंचीय प्रस्तुतियों, और सामाजिक उत्सवों में गीतों की "पुनरावृत्ति" को बढ़ाया-यानी गीत फिल्म से निकलकर नए प्रदर्शन-संदर्भों में फिर से रचा गया।[8]

समकालीन अंकीय युग में वैश्विक पहुंच का सबसे बड़ा परिवर्तन "वितरण की गति" और "अनुशंसा-तंत्र" के माध्यम से आया। जब संगीत की उपलब्धता मांग-आधारित हो जाती है, तब श्रोता का चयन केवल रेडियो-संपादक या कार्यक्रम-निर्धारक नहीं करता; चयन का बड़ा हिस्सा मंचों की कलन-विधि, साझा करने की आदतों, और छोटे-छोटे दृश्य-अंशों के प्रसार से तय होता है। इसका परिणाम यह हुआ कि कोई भी गीत किसी एक भूगोल में जन्म लेकर कुछ ही समय में विश्व के अनेक शहरों के श्रोताओं तक पहुंच सकता है, और वहां के स्थानीय नृत्य-रूपों व सामाजिक रीति-रिवाजों में शामिल हो सकता है। किंतु इसी के साथ यह भी बढ़ा कि लोकप्रियता के मानदंड अक्सर "सबसे अधिक देखे-सुने गए" पर टिक जाते हैं, जिससे विविधता और स्थानीय प्रयोगशीलता पर दबाव बनता है।

हिंदी सिनेमा-संगीत की वैश्विकता का एक महत्वपूर्ण स्तंभ प्रवासी समुदाय रहा है, पर उसे अकेला कारण मान लेना भी सीमित दृष्टि होगी। प्रवासी श्रोता-समुदायों ने गीतों को सांस्कृतिक स्मृति के रूप में संरक्षित किया, और सामुदायिक आयोजनों में उन्हें जीवित रखा। परंतु गैर-प्रवासी श्रोताओं के बीच इसकी पहुंच

अक्सर "नृत्य-उत्सव", "दृश्य-भव्यता" और "संकर ध्वनि" के आकर्षण से बनी। यह आकर्षण कई बार स्थानीय भाषाओं के बिना भी काम करता है, क्योंकि लय, ताल, और दृश्य-प्रदर्शन अर्थ की ऐसी परतें रचते हैं जो शब्दार्थ से आगे जाती हैं। इसी बिंदु पर हिंदी फिल्म-संगीत की "अर्थ-बहुलता" सामने आती है: एक ही गीत प्रवासी श्रोता के लिए स्मृति है, और गैर-प्रवासी श्रोता के लिए उत्सव।[9]

औद्योगिक स्तर पर वैश्विक पहुंच को संगीत-लेबल, अधिकार-प्रबंधन, और प्रचार-रणनीतियों ने आकार दिया। समकालीन हिंदी फिल्म उद्योग में गीत अक्सर फिल्म से पहले सार्वजनिक किए जाते हैं, ताकि वे रुचि और अपेक्षा का वातावरण बनाएं। अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के लिए यह रणनीति इसलिए भी प्रभावी है कि गीत का "हुक" या "मुखड़ा" जल्दी याद रह जाता है, और दृश्य-अंश सामाजिक माध्यमों में घूमने लगते हैं। पर इस रणनीति के भीतर कुछ जोखिम भी हैं: अधिकार-विवाद, श्रेय का असंतुलन, तथा पुराने गीतों के पुनर्निर्माण में मौलिकता और सांस्कृतिक स्मृति के बीच तनाव। ऐसे मामलों में वैश्विक मंचों पर आलोचना भी उतनी ही तेजी से फैलती है जितनी लोकप्रियता।

इन सभी प्रक्रियाओं से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी सिनेमा-संगीत की वैश्विक पहुंच किसी एक माध्यम, समुदाय या तकनीक की देन नहीं है, बल्कि यह ऐतिहासिक निरंतरता और समकालीन परिवर्तन के संयुक्त प्रभाव से निर्मित हुई है। माध्यमों के रूपांतरण ने जहां प्रसार की गति और क्षेत्र का विस्तार किया, वहीं श्रोताओं की ग्रहणशीलता ने गीतों को नए सामाजिक और सांस्कृतिक अर्थ प्रदान किए। इस परिप्रेक्ष्य में हिंदी फिल्म-संगीत को एक ऐसी जीवंत सांस्कृतिक संरचना के रूप में देखा जा सकता है, जो समय, भूगोल और समुदाय की सीमाओं को लांघते हुए निरंतर पुनर्रचित होती रहती है।

सौंदर्यशास्त्र की दृष्टि से हिंदी फिल्म-संगीत की वैश्विकता उसकी "अनुकूलनशीलता" से जुड़ी है। गीत-निर्माण में परंपरा और नवीनता का संतुलन लंबे समय से चलता आया है; यही संतुलन वैश्विक श्रोताओं के लिए भी पुल बनता है। संकरता यहां केवल बाहरी प्रभावों को जोड़ना नहीं, बल्कि स्थानीय भाव-रचना के साथ तालमेल बैठाना है। जब यह संतुलन सफल होता है, तो गीत एक साथ स्थानीय भी लगता है और विश्वनागरिक भी। किंतु जब उद्योग केवल तात्कालिक लोकप्रियता के लिए संकरता को सूत्रबद्ध नुस्खे में बदल देता है, तो संगीत का "चिरस्मरणीयपन" घट सकता है।[10]

अंततः, हिंदी सिनेमा-संगीत की वैश्विक पहुंच को सांस्कृतिक कूटनीति और आकर्षण-आधारित शक्ति के संदर्भ में भी देखा जा सकता है। जब कोई सांस्कृतिक रूप विदेशों में अपनाया जाता है, तो वह देश की छवि, भाषा के प्रति जिज्ञासा, और सांस्कृतिक निकटता को बढ़ा सकता है। पर यह प्रभाव स्वतः नहीं होता; यह इस बात पर निर्भर करता है कि किस प्रकार का भारत, किस प्रकार के संबंध, और किस प्रकार के सामाजिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व गीतों और दृश्यों के माध्यम से हो रहा है। इसलिए वैश्विक विस्तार के साथ प्रतिनिधित्व की जिम्मेदारी भी बढ़ती है-स्त्री-चित्रण, वर्ग-छवियाँ, और सांस्कृतिक विविधता का प्रश्न यहां केंद्रीय बन जाता है।[11]

इस विश्लेषण से निष्कर्ष निकलता है कि हिंदी सिनेमा-संगीत की वैश्विक पहुंच एक बहुस्तरीय प्रक्रिया है: तकनीक ने मार्ग खोले, प्रवासी नेटवर्क ने निरंतरता दी, उद्योग ने रणनीति बनाई, और श्रोताओं ने नए अर्थ गढ़े। भविष्य में इस पहुंच को अधिक न्यायपूर्ण और टिकाऊ बनाने के लिए अधिकार-संरक्षण, श्रेय-वितरण, और सांस्कृतिक विविधता के प्रति संवेदनशीलता को केंद्र में रखना होगा-ताकि वैश्विकता केवल विस्तार न रहे, बल्कि संवाद बन सके।[12]

इसके अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि हिंदी सिनेमा-संगीत की वैश्विक पहुंच को केवल सांस्कृतिक सफलता या बाज़ार-विस्तार के रूप में न देखकर, उसे सामाजिक उत्तरदायित्व और रचनात्मक नैतिकता के संदर्भ में भी परखा जाए। वैश्विक मंचों पर पहुंचने वाला संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं रह जाता, बल्कि वह उस समाज की सांस्कृतिक संवेदनाओं, मूल्य-प्रणालियों और सामाजिक यथार्थ का प्रतिनिधि बन जाता है, जिससे वह उत्पन्न हुआ है। ऐसे में यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो उठता है कि वैश्विक प्रसार की प्रक्रिया में किन आवाज़ों को स्थान मिल रहा है और किन्हें हाशिये पर धकेला जा रहा है।

आज के समय में जब अंकीय माध्यमों के कारण संगीत का उपभोग तीव्र, तात्कालिक और अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक हो गया है, तब हिंदी फिल्म-संगीत के समक्ष यह चुनौती भी है कि वह लोकप्रियता और गुणवत्ता के बीच संतुलन बनाए रखे। त्वरित दृश्यात्मक प्रभाव, दोहराव और सूत्रबद्ध रचनात्मकता अल्पकालिक आकर्षण तो पैदा कर सकती है, किंतु दीर्घकालीन सांस्कृतिक स्मृति के निर्माण के लिए संवेदनशील रचना, सामाजिक यथार्थ से जुड़ाव और सौंदर्यात्मक गहराई अनिवार्य है।

साथ ही, वैश्विक विस्तार के साथ संगीतकारों, गीतकारों और पार्श्वगायकों की रचनात्मक भूमिका और श्रेय-संरचना का प्रश्न भी महत्वपूर्ण हो जाता है। जब गीत अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पुनर्प्रस्तुत, पुनर्निर्मित या पुनर्व्याख्यायित होते हैं, तब मौलिकता, अधिकार

और सांस्कृतिक स्वामित्व जैसे मुद्दे अधिक जटिल हो जाते हैं। इन प्रश्नों का समाधान केवल कानूनी ढांचे से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवेदनशीलता और उद्योग की आत्मालोचनात्मक दृष्टि से ही संभव है।

इस प्रकार, हिंदी सिनेमा-संगीत की वैश्विक पहुंच को एक सतत सांस्कृतिक संवाद के रूप में समझा जाना चाहिए-ऐसा संवाद जो स्थानीय अनुभवों से जन्म लेकर वैश्विक मंचों तक पहुंचता है और वहां से लौटकर पुनः स्थानीय संदर्भों को प्रभावित करता है। यही पारस्परिकता हिंदी फिल्म-संगीत को न केवल वैश्विक बनाती है, बल्कि उसे समय के साथ प्रासंगिक, जीवंत और अर्थपूर्ण भी बनाए रखती है।

सन्दर्भ

1. " मैनुएल, पीटर. कैसेट संस्कृति: उत्तर भारत में लोकप्रिय संगीत और प्रौद्योगिकी. शिकागो विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1993, पृ. 52।"
2. "देसाई, जिग्ना. प्रवासी सिनेमा की सांस्कृतिक राजनीति: हिंदी सिनेमा के पार. रूटलेज, 2004, पृ. 118।"
3. "गान्ती, तेजस्विनी. हिंदी फिल्म उद्योग का निर्माण: समकालीन व्यवस्था के भीतर. ड्यूक विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2012, पृ. 74।"
4. "अप्पादुरै, अरजुन. आधुनिकता व्यापक परिदृश्य में: वैश्वीकरण के सांस्कृतिक आयाम. मिनेसोटा विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1996, पृ. 33।"
5. "पनथंबेकर, अश्विन. मुंबई से हिंदी लोकप्रिय सिनेमा तक: वैश्विक माध्यम-उद्योग का निर्माण. न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2013, पृ. 96।"
6. "देसाई, जिग्ना. प्रवासी सिनेमा की सांस्कृतिक राजनीति: हिंदी सिनेमा के पार. रूटलेज, 2004, पृ. 209।"
7. "गोपाल, संगीत, और सुजाता मूर्ति, संपादक. वैश्विक हिंदी सिनेमा: हिंदी गीत और नृत्य की यात्राएँ. मिनेसोटा विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2008, पृ. 27।"
8. "गान्ती, तेजस्विनी. हिंदी फिल्म उद्योग का निर्माण: समकालीन व्यवस्था के भीतर. ड्यूक विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2012, पृ. 151।"
9. "अप्पादुरै, अरजुन. आधुनिकता व्यापक परिदृश्य में: वैश्वीकरण के सांस्कृतिक आयाम. मिनेसोटा विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1996, पृ. 112।"
10. "ब्हाभा, होमी के. संस्कृति का स्थान. रूटलेज, 1994, पृ. 61।"
11. "नाइ, जोसेफ एस. आकर्षण की शक्ति: विश्व राजनीति में संस्कृति की भूमिका. पब्लिकअफेयर्स, 2004, पृ. 18।"
12. "पनथंबेकर, अश्विन. मुंबई से हिंदी लोकप्रिय सिनेमा तक: वैश्विक माध्यम-उद्योग का निर्माण. न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2013, पृ. 184।"